International Journal of Information Movement Vol.2 Issue III (July 2017)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 160-163

कृश्णा अग्निहोत्री की 'और और औरत' आत्मकथा में षोशित नारी का चित्रण

प्रा. मनोहर जमदाडे
एस. एस. ढमढेरे महाविद्यालय,
तलेगाव ढमढेरे, ता. षिरूर, जि. पुणे
महाराश्ट्र

'और ..और ...औरत' यह कृश्णा अग्निहोत्री की आत्मकथा का दूसरा भाग है। इस आत्मकथा में कृश्णा अग्निहोत्री ने पितृसत्ताक व्यवस्था में स्त्री के पारिवारिक जीवन पर प्रकाश डाला है। पितृसत्ताक व्यवस्था के कारण परिवार में पुरुष का वर्चस्व दिखाई देता है, जिसका नतीजा पति पत्नी पर रोब दिखाता है, भाई बहन पर रोब दिखाता है। स्त्री पुरुष पर आश्रित रहने के कारण ही उसे अपमानित होना पड़ता है। मन में आने पर वह कभी बहन को, कभी माँ को तो कभी बीवी को घर से बाहर निकाल देता है। स्वयं कृश्णाजी को उसके भाई ने घर से बाहर निकाल दिया था। एसी स्थिति में निर्दयी समाज उसे ही भला–बुरा कहता है। इस संदर्भ में कृश्णाजी लिखती हैं– ''मुझे स्वयं आश्चर्य है कि मैं मरी क्यों नहीं ? भाई ने सुंदर, कम आयुवाली बहन को घर से निकाला और निर्वासित बहन को लोगों ने भला–बुरा कहा। कोई भी व्यक्ति इस अन्याय के विरोध में नहीं खड़ा हुआ।''[1] कृश्णाजी की माँ हार्ट अटैक से बीमार हुई तब माँ को इंदौर लाना पड़ा। डॉ. सिपाहा ने बताया कि माँ तीन–चार माह से अधिक नहीं जी सकेगी। लेखिका की बहन उशा जिसे माँ बहुत प्यार करती थी वह दो–चार दिन में चली जाती है। तब माँ का बहुत बुरा लगता है। लेखिका माँ को अपने घर रखना चाहती है पर लोगों के कारण उसे अपने भतीजे के पास छोड़ना पड़ता है, वही पर माँ की मृत्यु हो जाती है।

कृश्णा अग्निहोत्री ने 'और ...और ...औरत' इस आत्मकथा में नारी के संघर्शपूर्ण जीवन को अभिव्यक्त किया है। नारी को परिवार, समाज, राजनीति, साहित्य के क्षेत्र में संघर्श करना पड़ता है। कृ श्णा अपने पति से बचने के लिए उनसे अलग होती है। पति से अलग होकर षोशण से मुक्ति मिलती है पर संघर्श तो खतम ही नहीं होता। अपनों के साथ, समाज के साथ, साहित्य क्षेत्र से जुड़े लोगों के साथ उसका संघर्श षुरू रहता है। जीवन संघर्श की शुरूआत तो उसके अपने परिवार से होती है। बड़ा भाई घर से निकालता है। लेखिका की माँ की परवरिश ठीक से न करने के कारण लेखिका कोर्ट तक पहुँचती है। वकीलों ने भी परेशान किया। वकील पैसों के लिए तारीख बढ़वा देते थे। इस संदर्भ में कृश्णा अग्निहोत्री लिखती हैं– ''भारत स्वतंत्र हो गया, महिलाओं की सुविधा हेतु महिला आयोग बने, कानून निर्मित तो हुए पर उन्हें व्यवहार में लाना इतना सरल नहीं है मेरे केस की फाईल ही नहीं खुली। मेरा वकील कल–परसों करता रहा।''[2] मकान बेचते समय दलालों से संघर्श करना पड़ता है। साहित्य के क्षेत्र में अन्य लेखक–लेखिकाओं के साथ संघर्श करना पड़ा। अकेली स्त्री देखकर कुछ प्रतिश्ठित व्यक्ति उसके भोलेपन का फायदा उठाना चाहते हैं पर लेखिका अपने विचारों, तत्त्वों और आदर्शों पर चलती रही। उनके जीवन संघर्श की अभिव्यक्ति उनके षब्दों में– ''आत्मकथा मात्र ऐसे सुखद, रोमांटिक, सेक्सी किस्मों की किस्सागोई तो नहीं रोजमर्रा की लड़ाई भी तो जीवट कर्म है। लंगडेपन में नीचे न बैठ पाने पर झाडू, पोंछा, बर्तन, खाना सब हैंडल करने के बाद लेखन कोई आनंद की स्थिति तो नहीं।''[3] षांता मामी का अपना अलग संघर्श है। विश्णु मामा के देहांत के बाद मामी लेखिका की माँ के घर ही रहती है। वह आश्रयहीन होने पर बहुत कश्ट उठाती है। काम करते समय गिर जाती है और अस्पताल में उसकी मृत्यु हो जाती है। बबुई का संघर्श तो दिल दहलानेवाला है। चाय बनाते समय जांघे झुलसती है। फिर वह पढ़ाई कर बच्चों को पढ़ाने का काम करती है। उसकी षादी दुबेजी नामक व्यक्ति से करा दी जाती है। वह केवल पैसों के लिए उनसे संबंध रखता है। वह उसे अकेली रहने के लिए बाध्य करता है। केवल एक तारीख को आता और महीने की तनखा लेकर चला जाता। बबुई गिड़गिड़ाती, पैर पकड़ती पर वह नहीं मानता। वह बबुई को मारपीट करता है।

उनकी बड़ी बेटी पिता के पास रहती थी। दुबे ने उसके मन में माँ के खिलाफ इतना जहर भरा था कि वह कभी माँ के पास नहीं रही। दुबे उसके चरित्र पर प्रष्न उठाता है। बबुई के भाई से षिकायत करता है, बेटी भी पिता की हाँ में हाँ मिलाती है। बबुई की मृत्यु पर दुबे उसे मुखाग्नि देता है। कृश्णा अग्निहोत्री भी पति की मारपीट को तंग आकर घर छोड़ती है और अपना अलग घर बनाती है। इस संदर्भ में वे लिखती हं– ''हमारे संबंधों की टूटन के वे ही एकमात्र जिम्मेदार हैं। मैं भी जानती हूँ कि यदि उनके पीटने से मैं भयभीत होकर कानपुर न छोड़ती तो आम स्त्री की भाँति कई समझौते के बीच जीती ही रहती। कुढ़ती ही रहती, पर प्रारब्ध तो दूसरी ही आँख मिचौली खेल रहा था।''[4]

'और ...और ...औरत' इस आत्मकथा में कृश्णा अग्निहोत्री ने रूढ़ि–परंपराओं से ग्रस्त नारी का चित्रण किया है। स्वयं लेखिका भी इससे नहीं बच पाती। वे स्वयं इन संस्कारों में जकड़ी है। सब कुछ जानते हुए भी अपने भीतर की औरत पर परंपरा के प्रभाव को स्वीकारती है। वह इस संदर्भ में लिखती हैं– ''मैं अपने भीतर की एक औरत को भी पहचानने लगी हूँ जो घबराई, डरी, भयभीत, रोतड़ी एवं परंपराओं व संस्कारों से जकड़ी हुई है।''[5]

षादी के बाद कृश्णा अग्निहोत्री पति के घर जाती है। पति के लिए व्रत, उपवास करती है। पति द्वारा मारपीट करने पर भी लेखिका विरोध नहीं करती। पत्नी की डोली पिता के घर से और अरथी पति के घर से उठती है। ऐसी सामाजिक मान्यता के कारण वह सबकुछ चुपचाप सहती है। इस संदर्भ में कृश्णा अग्निहोत्री लिखती हैं– ''हमारे समय स्त्री नेक पत्नी बनने का संकल्प नहीं लेती थी। पैदा होते ही उसके रक्त में एक मोटा इंजेक्षन दिया जाता था, कि तुम्हें पति के यहाँ से अरथी रूप में बाहर आना है।''[6]

इसी रूढ़ि–परंपरा के कारण विधवा पुनर्विवाह नहीं होते थे। लड़की युवावस्था में विधवा होने पर भी वह समाज के डर से अपना जीवन दुःख में बीताती थी। किसी के सलाह देने पर उस पर ही दोशारोप लगाए जाते हैं। लेखिका जब बबुई के विधवा होने पर पुनर्विवाह की सलाह देती है तो बबुई का छोटा भाई लेखिका से कहता है– ''देखिए जीजी, आपने ही मेरी बहन के कान भरे हैं। उसे बिगाड़ा है। जैसे आपने अपने पति को छोड़ दूसरा विवाह किया वैसे ही हमारी बहन को भड़काती है। हमारे मामले में दखल दिया तो अंजाम बुरा होगा। हमारे परिवार में औरतें दूसरी षादी नहीं करती।''[7] विधवा होने पर औरत के जीवन के सारे रंग खतम हो जाते हैं। केवल सफेद वस्त्र में उन्हें रहना पड़ता है। यहाँ तक की माथे पर सिंदूर भी नहीं लगा सकती। मनोरमा नाम की एक प्रोफेसर जो लगभग एक युनिव्हर्सिटी बनाने योग्य हैं। वह इन सबका निर्वाह करती है तो आम स्त्री की बात तो कुछ और ही है। लेखिका की परिचित सहेली श्रीमती हाड़ा के इस कथन से स्पश्ट होता ह कि स्त्री आज भी परंपराओं का कितना निर्वाह करती है। वे कहती हैं– ''आप तो चूड़ी पहनती हैं, बिछिया पहने हैं, पैरों में नेल पालिष है। बिंदी लगी है। मैं तो ये सब करने की हिम्मत नहीं जुटा सकी।''[8]

कृश्णा अग्निहोत्री की 'और ...और ...औरत' इस आत्मकथा में मानवीयता के दर्षन देखने को मिलते हैं। लेखिका में मानवीयता भरी–पूरी होने के कारण वह दूसरों के सुख–दुःख में सम्मिलित होती है। रिष्ते–नाते निभाती हैं। लोगों को जोड़ने का काम करती है। वह भूमिका में लिखती हैं– ''अजनबियों को अपनत्व देकर अपना बनाना, जिससे जीवन में जिस भाव, जिस रिष्ते की कमी हो, उसे वह प्रदान करने का मुझमें एक अद्भुत माद्दा रहा है। छोटी थी, तब यदि किसी ने कहा कि उसकी बहन नहीं है, बेटी नहीं है, तो कृश्णा तत्काल उसकी बहन व बेटी बनने को तत्पर हो जाती है।''[9] लेखिका अपने मकान में कांता नामक एक सिंधी महिला को किराये पर रखती है। कांता उनके पैर पकड़कर घर माँगती है। कांता ने बताया था वह षहर में वस्तुएँ बेचने का काम करती है। कांता के जाने पर कृश्णा उसके बच्चों के साथ टी. व्ही. देखती थी, खेलती थी। लेखिका को जब पता चलता है कांता कॉलगर्ल है। बड़े–बड़े सेठों के साथ बाहर जाती है। वह गुस्से से लाल होती है। कांता को आड़े हाथों लेकर सामान बाँधने को कहती है। उसी समय कांता की बड़ी बेटी पैरों पर झुककर परीक्षा के लिए पंद्रह दिन रहने की अनुमति माँगती है। तब लेखिका कहती है– ''यही तो मेरो करुणा है जो मेरी

दुर्बलता बन जाती है। मैंने उन आँसुओं से भीगे चेहरों पर दया कर पंद्रह दिन का समय दे दिया।''[10] लेखिका की बुआ की सबसे छोटी बेटी बबुई चाय बनाते समय जल जाती है। वह बहुत झुलस गई थी। उसे अपने पैरों पर खड़ा होने की आवष्यकता थी। उस समय लेखिका क्रिष्चियन टीचरों को बबुई की ट्रेनिंग के लिए आग्रह करती है। लेखिका के कारण उसे ट्रेनिंग दिया जाता है और षिक्षा विभाग में नौकरी भी मिलती है। लेखिका के मानवतावादी दृश्टिकोण के कारण बबुई के जीवन में आषा के किरन उत्पन्न हो जाते हैं। समाज में कानूनी क्षेत्र में काम करनेवाले लोगों पर हम अक्सर विष्वास नहीं करते। सभी को संदेह की दृश्टि से देखते हैं। पर उनमें भी कुछ मानवतावादी दृश्टिकोणवाले लोग हैं जो न्याय देते हैं। उसका परिचय लेखिका को मिलता है। लेखिका हरिकोट के न्यायाधिष सतीष षर्मा को कभी नहीं भूलती। लेखिका की कहानी सुनकर बिना फीस, व्यक्तिगत परिचय के आधारपर केस की आवष्यक कार्यवाही करते हैं।

'और ...और ...औरत' की लेखिका कृश्णा अग्निहोत्री को जीवन का अकेलापन कई बार मानसिक द्वंद्वों से गुजारने पर मजबूर कर देता है। पति को छोड़ वह अकेली रहती है। अकेली औरत को कई समस्याओं से गुजरना पड़ता है। तब उसके अंदर की औरत कुछ अलग सोचती है और उसके अंदर का साहित्यकार उसी विशय पर अलग प्रतिक्रिया देता है। एक जगह पर उन्होंने लिखा हैं– ''मुझे जब इस उम्र में तनहाइयां, कश्ट, असुविधाएँ भोगनी पड़ती हैं तो बस झुंझलाकर भीतरवाली औरत से कहती हूँ। कमबख्त चुप क्यों रहीं। पकड़ लेती किसी पदाधिकारी या रईस को। बड़ी बनती है आदर्षवादी। क्या अर्जित किया ? इतनी असुविधाएँ, दर्द, लांछन व अकेलापन। तब लेखक डाँटता है। अरे, मजे में हो न किसी का दबाव, न कोई डांट, न किसी के लिए चिंता, न भोजन की फिक्र। अरे सत्य, साधना, निश्ठा से ही लक्ष्य सिद्ध होते हैं। डटी रहो एक न एक दिन मरने के पूर्व सूरजमुखी खिलेंगे, तुम मन से खुष हो जाओगी।''[11]

कृश्णा अग्निहोत्री द्विधा मनस्थिति से गुजरती दिखाई देती है। आत्मकथा का षीर्शक भी इस बात को स्पश्ट कर देता है कि उनके अंदर की भी एक औरत है।

कृश्णा गरीब और धनिकों के बीच के संबंधों को देखती है, अनुभूत करती है। रुपयों के बल पर दूसरों को छोटा दिखाना, अपमानित करना उसके लिए असहनीय होता है। उसके भीतर की औरत मछली की तरफ तड़फ उठती है। पर षालीनता धारण करने के कारण कोई कटु उत्तर नहीं दे पाती। स्त्री जब प्यार करती है तो तन–मन से करती है। वचन देती है तो उसे निभाने की हिम्मत रखती है। किसी कारण उसमें बाधा पहुँचती है तो वह मन ही मन जल उठती है। कृश्णा भी अपने जन्मदिवस पर प्रताप को बुलाती है। पर अचानक उसकी बेटी नीहार उसे लंच के लिए बाहर ले जाती है। पर कृश्णा वहाँ खा नहीं सकी उसके मन में द्वंद्व बना रहता है। इस संदर्भ में वे लिखती हैं– ''मैं पास ही इंडिगो में खाने गई पर मुझे खाते समय ऐसा लगा जैसे प्रताप घर पर पहुँच गए हैं। मैं इतनी त्रस्त हो गई कि खा ही नहीं सकी।''[12] माँ के कहने पर भी कृश्णा माँ को अपने पास नहीं रख सकी। उसे अपने भतीजे के पास छोड़ती है तब भी लेखिका को मानसिक द्वंद्व से गुजरना पड़ता है। माँ को वे रखना तो चाहती हैं, पर अपनी असहायता व अकेलपन के कारण रखने का निर्णय भी नहीं कर पाती।

कृश्णा अग्निहोत्री ने 'और और औरत ' इस आत्मकथा में भारतीय नारी जीवन पर प्रकाश डाला गया है। आत्मकथा के माध्यम से भारतीय समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितियों पर प्रकाश डाला है। साथ हो भारतीय स्त्री के सामाजिक जीवन का उद्घाटन भी किया है। स्त्री पढ़ी–लिखी हो या अनपढ़ परिवार में उसे पुरुष पर निर्भर रहना पड़ता है। स्त्री को व्यक्ति स्वातंत्र्य, विचार स्वातंत्र्य पुरुष की तुलना में कम ही दिया जाता है। असमान व्यवहार के कारण उसे जीवनभर संघर्श करना पड़ता है।

संदर्भ :

1. और ...और ...औरत – कृश्णा अग्निहोत्री, सामयिक बुक्स, 3320– 21, जटवाड़ा, दरियागंज, एन. एस. मार्ग, नई दिल्ली– 110002, संस्करण– 2011, पृ. 32
2. वही, पृ. 43
3. वही, पृ. 160
4. वही, पृ. 73
5. और ...और ...औरत – कृश्णा अग्निहोत्री, सामयिक बुक्स, 3320– 21, जटवाड़ा, दरियागंज, एन. एस. मार्ग, नई दिल्ली– 110002, संस्करण– 2011, पृ. 10
6. वही, पृ. 142
7. वही, पृ. 149
8. वही, पृ. 150
9. और ...और ...औरत – कृश्णा अग्निहोत्री, सामयिक बुक्स, 3320– 21, जटवाड़ा, दरियागंज, एन. एस. मार्ग, नई दिल्ली– 110002, संस्करण– 2011, पृ. 07
10. वही, पृ. 46
11. और ...और ...औरत – कृश्णा अग्निहोत्री, पृ. 11–12
12. वही, पृ. 90